दो शब्द.

प्रिय बंधुओ व बहनो!

श्री जिनवाणी अगम है-वर्तमान में अनेकों शास्त्र हैं उनका स्वाध्याय करके जीव अपनी आत्मा का कल्याण करते हैं। उन्ही पूज्य शास्त्रों की ही कुछ अमूल्य बातें नवीन ढंग से इस पुस्तक में प्रगट कर पाठकों के सन्मुख उपस्थित की हैं आशा है कि यह पद्धति सबको पसंद पडेगी।

इस पुस्तक का दूसरा भाग छप रहा है वह शीघ्र ही पाठकों की सेवा में भेजा जावेगा।

मेरे आग्रह से प्रस्तुत पुस्तक का संशोधन पंडित अक्षय कुमारजी शास्त्री सुपरिन्टेन्डेन्ट शेठ केवलदास धनजी दिगम्बर जैन बोर्डिंग प्रांतीजने किया है; अतः अशुद्धियां संभव नहीं हैं। तथापि समयाभाव से कोई अशुध्धि रह गइ हो उसे पाठक गण क्षमा कर कृतार्थ करेंगे।

"भूषण भवन"
किरठल (मेरठ) निवासी.
S. S. L. Ry.

सेवकः—
सा० रत्न, सिद्धसेन जैन गोयलीय;
प्र० अध्यापक दि० जैन आश्रम,
जांबुडी. (हिम्मतनगर)
A. P. Ry.

जैन धर्मामृत. (प्रथम भाग)

१—सिद्धशिला.

(सिद्धों के रहने की जगह-४५ लाख योजन प्रमाण

१—अलोकाकाश.

(लोकसे बाहिर का आकाश)

१—धर्म—

(जीव और पुद्गल को चलने में सहकारी)

१—अधर्म—

(जीव और पुद्गल को स्थिति में सहकारी)

१—अंतराय बंधकारण—

(विघ्न करना)

१—तिर्यंचायु बंधकारण—

(माया)

१—एक अक्षरके मंत्र—

ॐ (पंचपरमेष्ठी वाचक)

ह्रीं (२४ तीर्थंकर वाचक)

१—अणु—

(जिसका कोई टुकडा न हो सके।)

२—श्रोता—

१—शुभ श्रोता

२—अशुभ श्रोता

२—पंडित—

१—धर्मार्थी (बादल समान)

२—मानार्थी (तन समान)

२—निषिद्ध दोष—

१—ईश्वर

२—अनीश्वर

२ -मणि—

१—मणि-(छिद्रसहित)

२—माणिका (छिद्रबिना)

२—इष्ट वियोग—

१—आशा सहित

२—आशा रहित

२—चक्षु दर्शन—

१—शक्ति चक्षुदर्शन

२—व्यक्त चक्षुदर्शन

२—जीव—

१—संसारी (कर्म सहित जीव)

२—मुक्त (कर्म रहित जीव)

२—संसारी जीव—

१—त्रस (त्रस नामा कर्मके उदयसे द्वि, त्रि, चतुर् व पंचेन्द्रियों में जन्म लेनेवाले)

२—स्थावर-(स्थावर नाम कर्म के उदय से पृथिवी आदि में जन्म लेनेवाले)

२—स्थावर—

१—बादर. (पृथिवी आदिक से जो रुक जाय वा दूसरों को रोके)

२—सूक्ष्म. (जो पृथिवी आदिक से न स्वयं रुके और न दूसरों कोरोके.)

२—वनस्पति—

१—प्रत्येक. (एक शरीरका एकही स्वामी)

२—साधारण. (जिन जीवों का आहार, श्वास, आयु व काय एक हो)

२—प्रत्येक वनस्पति—

१—सप्रतिष्ठित प्रत्येक (जिस प्रत्येक वनस्पति के आश्रय अनेक साधारण वनस्पति शरीर हों)

२—अप्रतिष्ठित प्रत्येक. (जिस प्रत्येक वनस्पति के आश्रय कोई भी साधारण वनस्पति न हो)

२—निगोद—

१—नित्यनिगोद-(जिसने निगोद के सिवाय दूसरी पर्याय न तो पाई और न पावेगा)

२—इतरनिगोद-(जो निगोद से निकलकर दूसरी पर्याय पाकर फर निगोद में उत्पन्न हो.)

२—भव्य—

१—भव्य (जिसे रत्नत्रय की प्राप्ति हो सके)

२—अभव्य (जिसे रत्नत्रय की प्राप्ति न हो)

२—आहारक—

१—आहारक

२—अनाहारक

२—सैनी—

१—सैनी (जिसके मन होय)

२—असैनी (जिसके मन न होय)

२—परिग्रह—

१—अंतरंग (कषायादि)

२—बहिरंग (धनधान्यादि)

२—गंध—

१—सुगंध (खुशबू)

२—दुर्गंध (बदबू)

२—पुद्गल—

१—अणु (सबसे छोटा पुद्गल—जिसका टुकडा न हो सके)

२—स्कंध (अनेक परमाणुओंका बंध)

२—आकाश—

१—लोकाकाश (जहां छहों द्रव्य हों)

२—अलोकाकाश (जहां केवल आकाश द्रव्य हो)

२—काल—

१—निश्चय काल (काल द्रव्य)

२—व्यवहार काल (काल द्रव्य की घडी, दिन, मास आदि वर्यायों को.)

२—मोक्ष मार्ग—

१—निश्चय (सत्यार्थ स्वरूप)

२—व्यवहार (निश्चय का कारण)

२—बंध—

१—द्रव्य (कार्माण स्कंध पुद्गल द्रव्य में आत्मा के साथ संबंध होने की शक्ति)

२—भाव (आत्मा के योग कषायरूप भावों को)

२—आस्रव—

१—द्रव्य (द्रव्य बंध का उपादान कारण अथवा भाव बंध का निमित्त कारण)

२—भाव (द्रव्य बंध का निमित्त कारण या भाव बंध का उपादान कारण)

२—आस्रव—

१—साम्परायिक (कषाय सहित)

२—ईर्यापथिक (कषाय रहित)

२—संवर—

१—द्रव्य (द्रव्य कर्मों के आश्रव के रोकने में कारण)
२—भाव (जो आत्मा के भाव कर्मों के आस्रव के रोकने में कारण)

२—निर्जरा—

१—द्रव्य—
२—भाव—

२—भाव निर्जरा—

१—सविपाक (नियत स्थिति को पुरी कर के कर्मों का झड जाना)
२—अविपाक (तप श्चरण द्वारा कर्मों को उदय में लाकर कर्मत्व शक्ति रहित कर देना)

२—पूजा—

१—द्रव्य (जलादी द्रव्य चढाकर पूजा करना)
२—भाव (केवल भक्ति भावों से स्तुति करना)

२—नय—

१—निश्चयनय (वस्तु के किसी असली अंश को ग्रहण करने वाला ज्ञान)
२—व्यवहारनय (किसी निमित के वश से एक पदार्थ को दुसरे पदार्थ रुप जानने वाला ज्ञान)

२—निश्चयनय—

१—द्रव्यार्थिक (जो द्रव्य अर्थात् सामान्य को ग्रहण करे)

२—पर्यायार्थिक-(जो विशेष (गुण-पर्याय) को विषय करे

२—गुण—

१—सामान्य (जो सब द्रव्यों में व्यापे)

२—विशेष (जो सब द्रव्यों में न व्यापे)

२—द्रव्य—

१—जीव (चेतना सहित)

२—अजीव (चेतना रहित)

२—चैतना—

१—दर्शन (जिस मे महासत्ता का प्रतिभास हो)

२—ज्ञान (विशेष पदार्थ को विषय करने वाली)

२—सत्ता—

१—महासत्ता (समस्त पदार्थों के अस्तित्व गुण को ग्रहण करने वाली)

२—आवान्तरसत्ता (किसी विवक्षित पदार्थ की सत्ता)

२—प्रमाण—

१—प्रत्यक्ष (जो पदार्थ को स्पष्ट जाने)

२—परोक्ष (दूसरे की सहायता से पदार्थ को स्पष्ट जाने)

२—प्रत्यक्ष—

१—सांव्यवहारिक (इन्द्रिय तथा मन की सहायता से पदार्थ को एक देश स्पष्ट जाने)

२—पारमार्थिक विना किसी की सहायता के पदार्थ को स्पष्ट जाने)

२—पारमार्थिक प्रत्यक्ष—

१—विकल (रुपी पदार्थों को विना किसी की मदद के स्पष्ट जाने)

२—सकल (केवल ज्ञान)

२—विकल पारमार्थिक प्रत्यक्ष—

१—अवधिज्ञान (द्रव्य क्षेत्र काल भाव की मर्यादा लिये जो रुपी पदार्थ को स्पष्ट जाने)

२—मनःपर्यय (दूसरे के मनमें तिष्ठते हुए रुपी पदार्थ को स्पष्ट जाने)

२—लक्षण—

१—आत्मभूत (वस्तु के स्वरुप में मिला हो)

२—अनात्मभूत (वस्तु के स्वरुप में मिला न हो)

२—मिथ्यात्व—

१—अगृहीत (पहिले से लगा हुवा)

२—गृहीत (इस भव में कुगुरु वगैरे के संबंध से होने वाला)

२—परमात्मा—

१—सकल (अर्हंत शरीर सहित चार घातिया कर्म नष्ट करने वाला)

२—निकल (सिद्ध—शरीर रहित—अष्ट कर्म रहित)

२—सम्यग्दर्शन—

१—निश्चय (अन्य द्रव्यों से भिन्न-आत्मा में श्रद्धान करना)
२—व्यवहार (जीवादिक सप्त तत्त्वों को यथार्थ श्रद्धान करना)

२—सम्यग्दर्शन—

१—निसर्गज (स्वभाव से होने वाला.)
२—अधिगमज (परनिमित्त से होने वाला.)

२—सम्यग्ज्ञान—

१—निश्चय (आत्म स्वरुप को जानना)
२—व्यवहार (जीवादि तत्त्वों का ज्ञान)

२—सम्यग्ज्ञान—

१—निसर्गज (स्वयमेव)
२—अधिगमज (निमित से)

२—सम्यक्चारित्र—

१—निसर्गज (स्वयमेव)
२—अधिगमज (निमित्त से)

२—सम्यक्चारित्र—

१—निश्चय (आत्मस्वरुप में लीन होना)
२—व्यवहार (व्रतादिक का पालन)

२—सम्यक्चारित्र—

१—एक देश (अणुव्रत रुप)
२—सकल देश (महाव्रत रुप)

२—परमाणु—

१—स्निग्ध (चिकने)
२—रूक्ष (रुखे)

२—औपशमिक भाव—

१—उपशम सम्यक्त्व (सप्त प्रकृतियों के उपशम से)
२—उपशम चारित्र (चारित्रमोहनीय के उपशम से)

२—उपयोग—

१—दर्शनोपयोग—
२—ज्ञानोपयोग—

२—इन्द्री—

१—द्रव्येन्द्री—(निवृत्ति व उपकरण)
२—भावेन्द्री—(लब्धि व उपयोग)

२—निवृत्ति—

१—अंतरंग—(आत्मा के विशुद्धप्रदेशों की इंद्रियाकार रचना)
२—वाह्य—(इन्द्रियो के आकाररुप पुद्गल की रचना)

२—उपकरण—

१—अंतरंग—(नेत्र इन्द्रिय में कृष्ण—शुक्ल मंडल की तरह सव इन्द्रियों में जो निवृत्ति का उपकार करे)
२—वाह्य—(नेत्रइन्द्रिय में पलक आदि की तरह जो निवृत्ति का उपकार करे)

२—द्रव्येन्द्री—

१—निर्वृत्ति (रचना)
२—उपकरण (रक्षक)

२—भावेन्द्री—

१—लब्धि—(क्षयोपशमजन्य विशुद्धि)
२—उपयोग—(एकाग्रता)

२—कल्पवासी—

१—कल्पोपन्न—(स्वर्गों में उत्पन्न होने वाले—स्वर्गवासी)
२—कल्पातीत—(स्वर्ग से ऊपर के देव)

२—मनुष्य—

१—आर्य—
२—म्लेच्छ—

२—आर्य—

१—ऋद्धिप्राप्तार्य (ऋद्धि वाले)
२—अनृद्धिप्राप्तार्य (ऋद्धि रहित)

२—म्लेच्छ—

१—अन्तर्द्वीपज (अन्तर्द्वीपों में उत्पन्न होनेवाले)
२—कर्मभूमिज (कर्मभूमि में उत्पन्न होनेवाले)

२—उपशमसम्यक्त्व—

१—प्रथमोपशमसम्यक्त्व—(अनादि मिथ्यादृष्टि के ५ और सादि के ७ प्रकृतियों के उपशम से जो हो)

२—द्वितीयोपशमसम्यक्त्व-(सातवेंगुणस्थान में क्षायोपशमिक सम्यग्दृष्टि जीव श्रेणी चढने के सन्मुख अवस्था में अनंतानुबंधी चतुष्टय का विसंयोजन करके दर्शन मोहनीय की तीनों प्रकृतियों का उपशम करके जो सम्यक्त्व प्राप्त करता है)

२—मिथ्यादृष्टि—

१—अनादि मिथ्यादृष्टि-(अभी तक सम्यग्दर्शन का अभाव)
२—सादि मिथ्यादृष्टि-(सम्यग्दर्शन होकर छूट गया हो)

२—श्रेणी—

१—उपशम (कर्मों के उपशम से)
२—क्षायिक (कर्मों के क्षय से)

२—श्री—

१—अंतरंग श्री (अनंतचतुष्टय रूप)
२—बाह्य श्री (समवशरणादिक)

२—नियम—

१—यम (आजन्म का नियम)
२—नियम (अमुक समय का नियम)

२—भोग—

१—भोग (एक बार भोगने में आवे)
२—उपभोग (बार बार भोगने में आवे)

२—व्रत—

१—अणुव्रत (१२ प्रकार)

२—महाव्रत (सकलचारित्र)

२—गोत्र—

१—उच्चगोत्र—(जिसमें लोकमान्य उच्चकुल में पैदा हो)

२—नीचगोत्र—(जिससे लोक निंद्य कुल में पैदा हो)

२—आसन—

१—खड्गासन

२—पद्मासन

२—कषाय—

१—कषाय (जो आत्मा को कषे)

२—नोकषाय (किंचित् कषाय)

२—वेदनीय—

१—सातावेदनीय (जिससे सुख मिले)

२—असातावेदनीय (जिससे दुख मिले)

२—उद्दिष्टत्यागप्रतिमा—

१—ऐलक (एक लंगोटी मात्र राखे)

२—क्षुल्लक—(एक चादर रक्खे)

२—तप—

१—सुतप—(अच्छा)

२—कुतप (खोटा)

२—सुख—

१—सांसारिक (इस लोक सम्बंधी)
२—पारमार्थिक (आत्मिक-मोक्ष सुख)

२—कर्म—

१—सत्कर्म (अच्छे कर्म)
२—दुष्कर्म (बुरे कर्म)

२—शौच—

१—अंतरंग (लोभ त्याग)
२—बाह्य (लौकिक शुध्धि)

२—लोक—

१—इहलोक
२—परलोक

२—प्राण—

१—भावप्राण (ज्ञान दर्शन)
२—द्रव्यप्राण (५ इंद्रिय ३ बल १ आयु-श्वासोच्छ्वास)

२—भाव प्राण—

१—ज्ञान (जानना)
२—दर्शन (देखना)

२—मुनि—

१—द्रव्यलिंगी (आत्म ज्ञान रहित)
२—भावलिंगी (आत्मज्ञानी)

२—स्वभाव—

१—सरल स्वभाव (त्रियोग की एकता)
२—कुटिल स्वभाव (त्रियोग की विपरीतता)

२—कषाय—

१—मन्द (थोडी)
२—तीव्र (अधिक)

२—मोहनीय—

१—दर्शन मोहनीय (दर्शन गुण को घाते)
२—चारित्र मोहनीय (चारित्र गुण को घाते)

२—नाम ऋषभनाथ—

१—ऋषभनाथ
२—आदिनाथ (केशरिया भगवान)

२—नाम पुष्पदंत—

१—पुष्पदंतनाथ
२—सुविधिनाथ

२—मन—

१—द्रव्य मन (शरीर रुप)
२—भाव मन (आत्मा रुप)

२—अंग—

१—अंग (मुख्य अंग)

२—उपंग (अंग के भाग)

२—उपसर्ग—

१—चेतन कृत (जीव द्वारा)

२—अचेतन कृत (अजीव द्वारा)

२—गुण—

१—सुगुण

२—दुर्गुण

२—गुण—

१—मूल गुण (मुख्य गुण)

२—उत्तर गुण (गौण गुण)

२—धर्म—

१—मुनि धर्म

२—श्रावक धर्म

२—व्युत्सर्ग -

१ अन्तरंग

२—बाह्य

२—श्रुति—

१—अंगबाह्य (सामायिकादि १४ भेद)

२—अंगप्रविष्ट (आचारांगादि १२ भेद)

२--मनःपर्यय ज्ञान—

१—ऋजुमति (मन वचन कायकी सरलता रूप दूसरे के मन की बात जानना)

२—विपुलमति (सरल व वक्र रूप दूसरे के मन की बात जानना)

२—निर्माण—

१—स्थान निर्माण (अंगोपांगो का योग्य स्थानमें निर्माण होना)

२—प्रमाण निर्माण (अंगोपांगो की योग्य प्रमाण लिये रचना होना)

२—अवग्रह—

१—अर्थावग्रह (व्यक्त पदार्थ का अवग्रह)

२—व्यंजनावग्रह (अव्यक्त पदार्थ का अवग्रह)

२—अधिकरण—

१—जीवाधिकरण.

२—अजीवाधिकरण.

२—निर्वर्तना—

१—देहदुःप्रयुक्त निर्वर्तनाधिकरण (शरीर से कुचेष्टा उत्पन्न करना)

२—उपकरण निर्वर्तनाधिकरण (हिंसा के उपकरण बनाना)

२—संयोग—

१—उपकरण संयोजना (शीत स्पर्श रूप पुस्तकादि को गर्म

पीछी से साफ करना)

२—भक्तपान संयोजना (पान तथा भोजन को दूसरे पान भोजन में मिलाना)

२—स्कंध—

१—लघु स्कंध

२—महा स्कंध

२—स्थापना—

१—तदाकार (आकार सहित)

२—अतदाकार (आकर रहित)

२—पर्याय—

१—व्यंजन पर्याय (प्रदेशत्व गुण का विकार)

२—अर्थ पर्याय (प्रदेशत्व गुण के सिवाय अन्य समस्त गुणो का विकार)

१—व्यंजन पर्याय—

१—स्वभाव व्यंजन पर्याय (बिना दूसरे निमित्त के जो व्यंजन पर्याय हो)

२—विभाव व्यंजन पर्याय (दूसरे निमित से जो व्यंजन पर्याय हो)

२—अर्थ पर्याय—

१—स्वभाव अर्थपर्याय (बिना दूसरे निमित के होने वाली)

२—विभाव अर्थपर्याय (पर निमित्त से जो अर्थपर्याय हो)

२—क्रिया—

१—बाह्य क्रिया (पांच पाप करना)
२—आभ्यंतर क्रिया (योग कषाय)

२—कारण—

१—समर्थ कारण (प्रतिबंधक का अभाव होने पर सहकारी समस्त सामग्री का सद्भाव)

२—असमर्थ कारण (भिन्न २ प्रत्येक सामग्री)

२—सहकारी सामग्री—

१—निमित्तकारण (जो पदार्थ स्वयं कार्य रुप न परिणमे)
२—उपादान कारण (जो पदार्थ स्वयं कार्य रुप परिणमे)

२—स्वर—

१—सुस्वर (अच्छा)
२—दुस्वर (बुरा)

२—नाम कर्म—

१—शुभ नाम (जिससे शरीर के अवयव सुंदर हों)
२—अशुभ नाम (जिससे शरीर के अवयव सुंदर न हों)

२—घात—

१—उपघात (अपना ही घात करने वाले अंग)

२—परघात (दूसरे के घात करने वाले अंग)

२—मति ज्ञान—

१—सांव्यवहारीक प्रत्यक्ष

२—परोक्ष

२—गुण—

१-अनुजीवी (भाव स्वरुप गुण, सम्यक्त्वादि)
२-प्रतीजीवी (वस्तु का अभाव स्वरुप धर्म)

२—दृष्टांत—

१—अन्वय दृष्टांत (जहां साधन की मौजूदगी में साध्य की मौजूदगी दिखाइ जाय)

२—व्यतिरेक दृष्टांत (जहां साध्यकी गैर मौजूदगी में साधन की गैर मौजूदगी दिखाई जाय)

२—अकिंचित्करहेत्वाभास—

१—सिद्धसाधन (जिस हेतु का साध्य सिद्ध हो)

२—बाधितविषय (जिस हेतु के साध्य में दूसरे प्रमाणसे बाधा आवे)

२—विशेष—

१—सहभावी (वस्तु के पूरे हिस्से और उसकी सब अवस्थाओं में रहने वाला विशेष)

२—क्रमभावी (क्रम से होने वाले वस्तु के विशेष को)

२—नरकायुबंध कारण—

१— बहु आरंभ

२—बहु परिग्रह

२—मनुष्यायु बंध कारण—

१—अल्पारंभ

२—अल्प परिग्रह

२— अशुभनाम बंध कारण—

१—योग वक्रता (मन वचन काय की कुटिलता)

२—विसंवादन (लड़ाई झगड़ा)

२—शुभनाम बंध कारण—

१—योग सरलता

२—अविसंवादन

२—निर्वर्तना—

१—मूल गुण निर्वर्तना (५ शरीर, मन, वचन श्वासोच्छ्वास उत्पन्न करना)

२—उत्तरगुण निर्वर्तना (निष्कपट नकशा मूर्ति तैयार करना)

२—काय—

१—स्थावर काय (जिसके मात्र एक स्पर्शनेन्द्रिय हो)

२—त्रसकाय (द्वि, त्रि. चतुर व पंच इन्द्रिय हो ।

२—स्त्री—

१—चेतन स्त्री (जीव सहित)
२—अचेतन स्त्री (चित्रपटादि अजीव स्त्री)

२—कर्म—

१—घातिया (जो आत्मा के गुणों का घात करें)
२—अघातिया (जो आत्मा के गुणों का घात न करे)

२—द्रव्य जीव—

१—आगम द्रव्य जीव
२—नो आगम द्रव्य जीव

२—भाव जीव—

१—आगम भाव जीव
२—नो आगम भाव जीव

२—गति—

१—अविग्रहगति (ऋजु सरल गति)
२—विग्रहगति (मोडे वाली गति)

२—लेश्या—

१—शुभ (पीत पद्म शुक्ल)
२—अशुभ (कृष्ण नील कापोत)

२—अक्षर के मंत्र—

१—ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं.
२—सिद्ध

२– दु:ख—

१—शारीरिक (शरीर संबंधि)

२—मानसिक (मन संबंधि)

२— अवधिज्ञान —

१—भवप्रत्यय (जन्म से)

२—गुणप्रत्यय (तपादिक से)

२—काल—

१—उत्सर्पिणी (जिसमें आयु आदि बढता जाय)

२—अवसर्पिणी (जिसमें आयु बलादि घटता जाय)

२—कुशील—

१—प्रतिसेवना कुशील (जिस मुनि के शरीर उपकरणादि से विरक्तता न होय मूल व उत्तर गुणों की पूर्णता होय)

२—कषाय कुशील (कदाचित उत्तर गुणों में दोष आवे) जिन मुनियों के संज्वलन कषाय हो)

२—संयम—

१—इन्द्री संयम-(५ ईन्द्रियों व मन को वश में करना)

२—प्राणि-संयम (६ काय के जीवों की रक्षा करना।

३—आत्मा—

१—बहिरात्मा-(मिथ्यादृष्टि-जीव-शरीर को समान जानने वाला)
२अंतरात्मा-(सम्यग्दृष्टि)
३—परमात्मा-(अरहंत-सिद्ध)

३—अंतरात्मा—

१—उत्तम (मुनि)
२—मध्यम (श्रावक)
३—जघन्य (व्रतरहित सम्यग्दृष्टि)

३—सुपात्र—

१—उत्तम
२—मध्यम
३—जघन्य

३—पात्र—

१—सुपात्र (मुनि. आर्यका, श्रावक श्राविका)
२—कुपात्र-(अन्यमती मिथ्यादृष्टि धरमात्मा)
३—अपात्र—(सम्यक्त्व और व्रत रहित)

३—रत्न—

१—सम्यग्दर्शन (सच्चा श्रध्धान)
२—सम्यग्ज्ञान (सच्चा ज्ञान)
३—सम्यग्चारित्र (सच्चाचारित्र)

३—लोक—

१—ऊर्द्ध्वलोक (स्वर्गादि)
२—मध्यलोक (जम्बूदिपादि)
३—पाताललोक (नरकादि)

३—काल—

१—भूतकाल (जो हो चूका)
२—वर्तमानकाल (जो चल रहा है)
३—भविष्यकाल (जो आगे होगा)

३—काल—

१—प्रातः
२—मध्यान्ह
३—सायं

३—वेद—

१—पुंवेद
२—स्त्रीवेद
३—नपुंसकवेद

३—विकलत्रय—

१—द्वीन्द्रिय
२—त्रीन्द्रिय
३—चतुरिन्द्रिय

३—कर्म—

१—द्रव्यकर्म (ज्ञानावरणादि)
२—भावकर्म (रागद्वेषादि)
३—नोकर्म (औदारिकादि)

३—नोकर्म—

१—औदारिक
२—वैक्रियक
३—आहारक

३—वायु—

१—घनोदधिवातवलय
२—घनवातवलय
३—तनुवातवलय

३—करण—

१—अधःकरण
२—अपूर्वकरण
३—अनिवृत्तिकरण

३—नायक—

१—देशनायक
२—घर नायक
३—मन नायक

३—जाप्य—

१—वाचिक (बोलकर)
२—उपांशु—(विना बोले ओठों को चलाकर)
३—मानस (मन में विचार करना)

३—मूढता—

१—देव मूढता (रागी द्वषी देवों को पूजना)
२—लोक मूढता (गंगा में स्नान कर धर्म मानना आदि)
३—गुरु मूढता (मिथ्यादृष्टि गुरुओं को मानना)

३—गुणव्रत—

१—दिग्व्रत (दशों दिशाओं का आनेजाने का जन्मपर्यंत नियम)
२—देशव्रत (अमुक समय तक आने जाने की मर्यादा)
३—अनर्थदंडव्रत (विना प्रयोजन कार्य में प्रवृत्ति न करना)

३—शल्य—

१—माया (मायाचार)
२—मिथ्यात्व (अश्रध्धान)
३—निदान (संसार सुख की आशा)

३—उपयोग—

१—अशुभोपयोग
२—शुभोपयोग
३—शुध्धोपयोग—

३—दुःख—

१—मानसिक (मनसे होने वाला)
२—वाचिक (वचन से होने वाला)
३—कायिक (काय से होने वाला)

३—निसर्ग—

१—मनोनिसर्ग (दुष्ट प्रकार से मनप्रवृत्ति)
२—वाग्निसर्ग (दुष्ट प्रकार से वचन प्रवृत्ति)
३—कायानिसर्ग (दुष्ट प्रकार से काय प्रवृत्ति)

३—जन्म—

१—गर्भ (मनुष्य पशु आदि का)
२—उपपाद (देव नारकी का)
३—सम्मूर्छन (घास आदि का)

३—गर्भ जन्म—

१—जरायुज (जेर से उत्पन्न होने वाले)
२—अंडज (अंडे से उत्पन्न होने वाले)
३—पोतज (उत्पन्न होते ही भागने वाले)

३—गुप्ति—

१—मनोगुप्ति (मन वश करना)
२—वचनगुप्ति (वचन वश करना)
३—कायगुप्ति (काय वश में करना)

३—योग—

१—मन
२—वचन
३—काय

३—पदार्थ—

१—हेय (छोड़ने लायक)
२—ज्ञेय (जानने लायक)
३—उपादेय (ग्रहण करने लायक)

३—पल्य—

१—व्यवहार पल्य (४५ अंक प्रमाण रोमों को १०० वर्ष बाद एक २ काढने से जितना समय लगे)
२—उद्धार पल्य (व्यवहार पल्य से असंख्यात गुना)
३—अद्धा पल्य (उद्धार पल्य से असंख्यात गुना)

३—अवस्था—

१—बाल्यावस्था
२—युवावस्था
३—वृद्धावस्था

३—अणुव्रती श्रावक—

१—पाक्षिक
२—साधक
३—नैष्ठिक

३—अवधिज्ञान—

१—देशावधि

२—सर्वावधि

३—परमावधि

३—पारिणामिकभाव—

१—जीवत्व

२—भव्यत्व

३—अभव्यत्व

३—द्रव्य लक्षण—

१—उत्पाद (उत्पन्न होना)

२—व्यय (नाश होना)

३—ध्रौव्य (निश्चत रूप से रहना

३—मकार—

१—मद्य (शराब)

२—मांस (गोस्त)

३—मधु (शहद)

३—संरंभादि—

१—समारंभ (किसी कार्य का मन में विचार करना)

२—समारंभ (कार्य के लिए सामग्री इकठी करना)

३—आरंभ (कार्य शुरु करना)

३—कृतादि—

१—कृत (स्वयं करना)
२—कारित (दुसरे से कराना)
३—अनुमोदना (सलाह देना)

३—ब्रह्मचारी

१—स्त्री त्यागी
२—क्रिया ब्रह्मचारी
३—कुल ब्रह्मचारी

३—चर—

१—जलचर (जल में रहने वाले)
२—थलचर (पृथ्वी पर चलने वाले)
३—नभचर (आकाश में उडने वाले)

३—श्रावक-चिन्ह—

१—छानकर पानी पीना
२—रात्री भोजन त्याग
३—दरशन करके खाना

३—तीर्थंकर ३ पद धारक—

१—शांतिनाथ
२—कुन्थुनाथ
३—अरनाथ

३—चौबीसी—

१—भूत
२—वर्तमान
३—भविष्यत

३—अंगोपांग—

१—औदारिक
२—वैक्रियक
३—आहारक

३—मंगलाचरण

१—नमस्कारात्मक
२—आशीर्वादात्मक
३—वस्तुनिर्देशात्मक

३—स्त्री—

१—मनुष्यनी (चेतन)
२—तिर्यंचनी
३—देवी

३—स्त्री—

१—काष्ठ(अचेतन)
२—चित्राम
३—धातु

३—छत्र—

(भगवान के ऊपर रहते हैं)

३—वर्ग—

१—धर्म २—अर्थ ३—काम

३—लक्षणाभास—

१—अव्याप्ति (लक्ष्य के एक देश में लक्षण का रहना)
२—अतिव्याप्ति (लक्ष्य और अलक्ष्य में लक्षण का रहना)
३—असंभव (लक्ष्य में लक्षण की असंभवता)

३—हेतु—

१—केवलान्वयी (जिस हेतु में सिर्फ अन्वय दृष्टांत हो)
२—केवल व्यतिरेकी (केवल व्यतिरेकी दृष्टांत हो)
३—अन्वय व्यतिरेकी (जिसमें अन्वयी दृष्टांत और व्यतिरेकी दृष्टांत दोनों हों)

३—प्रमाणाभास—

१—संशय (विरुद्ध अनेक कोटि स्पर्श करने वाला ज्ञान)
२—विपर्यय (विपरीत एक कोटी का निश्चय करने वाला ज्ञान)
३—अनध्यवसाय (यह क्या है "ऐसा प्रतिभास")

३—द्रव्यार्थिक नय—

१—नैगम (पदार्थ के संकल्प को ग्रहण करने वाला ज्ञान)
२—संग्रह (अपनी जाति का विरोध नहिं करके अनेक

विषयों का एकपने ग्रहण करने वाला)

३—व्यवहार (संग्रहनय से ग्रहण किये हुए पदार्थों का विधि पूर्वक भेद करे)

३—व्यवहार नय (उपनय)

१—सद्भूत व्यवहारनय (एक अखंड द्रव्य को भेद रूप विषय करने वाला ज्ञान)

२—असद्भूत व्यवहारनय (मिले हुये भिन्न पदार्थों को अभेद रूप ग्रहण करने वाला)

३—उपचरित व्यवहारनय (अत्यन्त भिन्न पदार्थों को अभेद रूप ग्रहण करने वाला)

३—अविरति—

१—अनंतानु बंधि कषायोदय जनित

२—अप्रत्याख्याना वरण कषायोदय जनित

३—प्रत्याख्याना वरण कषायोदय जनित

३—स्थान एक २ लाख योजनके—

१—जम्बूदीप

२—सातवें नरक का पहला इन्द्रक पटल

३—सर्वार्थ सिद्ध विमान

३—भव्य—

१—निकट भव्य

२—दूर भव्य

३—दूरान्दूर भव्य

३—भाव—

१—अशुभ (कषायादि)

२—शुभ (धार्मिकभाव)

३—शुध्द (आत्मिकभाव)

३—चेतना—

१—कर्म चेतना

२—कर्म फल चेतना

३—ज्ञान चेतना

३—अक्षर के मंत्र—

ॐ नमः

ह्रीं नमः

३—करण—

१—अधःकरण (जिस करण में उपरितन समयवर्ती तथा अधस्तन समयवर्ती जीवों के परिणाम सदृश तथा विसदृश हों)

२—अपूर्वकरण (जिसमें उत्तरोत्तर अपूर्व ही अपूर्व परिणाम होते जावें)

३—अनिवृति करण (जिस में भिन्न समय वर्ती जीवों के परिणाम विसदृश ही हों और एक समयवर्ती जीवों के सदृश ही हों)

३—योग स्थान—

१—उत्पादयोग स्थान
२—एकांत वृध्धि योग स्थान
३—परणाम योग स्थान

} गोमट्टसार जीवकांड में देखो

३—धर्म अरुचि के कारण—

१—अज्ञानता
२—कषाय
३—पापोदय

३—पर्याप्ति—

१—पर्याप्ति
२—अपर्याप्ति (निर्वृत्य पर्याप्ति)
३—लब्धि अपर्याप्ति

३—आंगुल—

१—नाम उच्छेद आंगुल
२—आत्म. आंगुल
३—प्रमाण आंगुल

३—हार (आभूषण)—

१—एकावली जिष्टी हार
२—रत्नावली जिष्टी हार
३—अप्रवृतिकहार

३—अक्षर—

१—निवृत्ति अक्षर

२—लब्धि अक्षर

३—स्थापना अक्षर

३—अग्नि—

१—शोकाग्नि

२—आर्त अग्नि

३—काष्ठ अग्नि

३- अतिशय—

१—वचन अतिशय

२—आत्म अतिशय

३—भोग अतिशय

४—दान—

१—आहार दान
२—औषध दान
३—ज्ञान दान
४—अभय दान

४—चार राजाओं की विद्या—

१—अनीप की विद्या
२—अई विद्या
३—वार्ता विद्या
४—दंडनी विद्या

४—गति—

१—देव गति
२—मनुष्य गति
३—तिर्यंच गति
४—नरक गति

४—कषाय—

१—क्रोध (गुस्सा करना)
२—मान (घमंड करना)
३—माया (छलकपट)
४—लोभ (परीग्रह की इच्छा लालच)

४—अनुयोग—

१—प्रथमानुयोग (पुराण चरित्र जिसमें हो)
२—करणानुयोग (लोक—गति संबंधि वर्णन)
३—चरणानुयोग (मुनि श्रावक चारित्र वर्णन)
४—द्रव्यानुयोग (आत्मा द्रव्य संबंधी वर्णन)

४—त्रस—

१—द्वि इन्द्रिय
२—त्रि इन्द्रिय
३—चतुर इन्द्रिय
४—पंचे इन्द्रिय

४—मंगल—

१—अरहंत मंगल
२—सिद्ध मंगल
३—साधू मंगल
४—केवलि प्रणीत धर्म

४—ध्यान—

१—आर्त } अशुभ
२—रौद्र

३—धर्म } शुभ
४—शुक्ल

४—आर्तध्यान—

१—इष्ट वियोगज (प्रिय वस्तु के वियोग होने पर प्राप्ति का विचार करना)
२—अनिष्ट संयोगज (अप्रिय वस्तु का संयोग होने पर दूर करने का चिंतवन)
३—वेदना (रोग जनित पीडा का चिंतवन)
४—निदान (आगामी विषय भोगों की इच्छा)

४—रौद्रध्यान—

१—हिंसानंद (हिंसा करके आनंद मानना)
२—अनृतानंद (झूठ बोलने में आनंद मानना)
३—स्तेयानंद (चोरी में आनंद मानना)
४—परिग्रहानंद (विषय सामग्री की रक्षा करने में आनंद मानना)

४—धर्मध्यान—

१—आज्ञाविचय (आगम की आज्ञानुसार पदार्थों के स्वरुप को विचारना)
२—अपायविचय (सन्मार्ग के प्रचार का चिंतवन करना)
३—विपाकविचय (कर्म फल का चिंतवन करना)
४—संस्थानविचय (लोक के स्वरुप का चिन्तवन)

४—संस्थान विचय

१—पिंडस्थ
२—पदस्थ

३—रूपस्थ

४—रूपातीत

४—शुक्लध्यान—

१—पृथक्त्ववितर्कविचार

२—एकत्ववितर्क

३—सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति

४—व्युपरतक्रियानिवर्ति

४—संघ—

१—मुनि

२—आर्यिका

३—श्रावक

४—श्राविका

४—देव—

१—भवनवासी

२—व्यंतर

३—ज्योतिषी

४—कल्पवासी

२—देव— —

१—देवाधिदेव (अरहंत-सिद्ध)

२—देव (भवनवासी वगैरे)

३—कुदेव (मिथ्याती देव)

४—अदेव (तुलसी, पीपलादि)

४—दर्शन—

१—चक्षुःदर्शन (आंख से सत्ता मात्र देखना)

२—अचक्षुदर्शन (आंख सिवाय अन्य इन्द्रियों से किसी वस्तु की सत्ता मात्र का जानना)

३—अवधिदर्शन (अवधिद्वारा रूपी पदार्थों की सत्ता मात्र का जानना)

४—केवलदर्शन (केवली को समस्त पदार्थों की सत्ता मात्र का भान होना)

४—संज्ञा—

१—आहार (खाना)

२—निद्रा (सोना)

३—परिग्रह (लोभ)

४—मैथुन (विषय-इच्छा)

४—पुरुषार्थ—

१—धर्म

२—अर्थ

३—काम

४—मोक्ष

४—निक्षेप—

१—नाम-व्यवहार के लिये नाम रखना.

२—स्थापना-किसी एक वस्तु को दूसरी वस्तु स्थापन करना।

३—द्रव्य-भूत वा भविष्यत के गुणरूप कहना।

४—भाव-वर्तमान समय में जैसा हो वैसा कहना।

४—भावना—

१—मैत्री-(सब जीवों से मित्रता रखना)

२—प्रमोद (गुणाधिकों से प्रसन्नता का भाव)

३—कारुण्य (दुःखी जीवों पर करुना-वृद्धि रखना).

४—माध्यस्थ (पापी अविनयी जीवों में माध्यस्थ भाव रखना)

४—विकथा—

१—स्त्री कथा

२—देश कथा

३—भोजन कथा

४—राज कथा

४—भावना (गृहस्थ) धर्म—

१—दान

२—शील

३—तप

४—भावना

४—वर्ण

१—ब्राह्मण

२—क्षत्री
३—वैश्य
४—शूद्र

४—वन—

१—भद्रसाल
२—सौमनस
३—नंदनवन
४—पांडुक

} मेरु पर्वत संबंधी

४—अनंत चतुष्टय—

१—अनंत दर्शन
२—अनंत ज्ञान
३—अनंत सुख
४—अनंत वीर्य

४—आयु—

१—नरकायु
२—देवायु
३—मनुष्यायु
४—तिर्यंचायु

४—आराधना—

१—दर्शन
२—ज्ञान
३—चारित्र

४—तप

४—आश्रम—

१—ब्रह्मचर्याश्रम

२—गृहस्थाश्रम

३—वानप्रस्थाश्रम

४—उदासीनाश्रम

४—हिंसा—

१—संकल्पी (जान बूझ कर)

२—विरोधी (अपना बचाव करने में)

३—आरंभी (आरंभ करने में)

४—उद्योगी (व्यापारादि में)

४—सम्यक्त्वचिन्ह—

१—प्रशम (समता)

२—संवेग (वैराग्य)

३—अनुकंपा (दया)

४—आस्तिक्य (श्रद्धा)

४—मान—

१—द्रव्यमान

२—क्षेत्रमान

३—कालमान

४—भावमान

४—अर्जिका के गुण—

१—लज्जा

२—विनय

३—वैराग्य

४—शुभाचार

४—दण्ड—

१—हा

२—हा, मा

३—हा, मा धिक्

४—वध बधनादि

४—दान—

१—सर्वदान (ससार त्याग)

२—पात्रदान (४ संघ को)

३—समदान (साधर्मी को)

४—दयादान (दुखी जीवों को)

४—बंध—

१—प्रकृतिबंध (कर्म जिस स्वभाव को लिए हुए है वह)

२—स्थितिबंध (जितने समय तक वह कर्म आत्माके साथ रहे)

३—अनुभागबंध (तीव्र--मंद जैसा उस कर्मका फल है वह)

४—प्रदेशबंध (कर्मों का आत्मा के प्रदेशों से एक क्षेत्रावगाह रूप—संबंध होना)

४—दोष—

१—अतिक्रम (मन में विकार)
२—व्यतिक्रम (व्रत-उल्लंघन)
३—अतीचार (विषयों में प्रवृति)
४—अनाचार (विषयों में आसक्ति)

४—काल—

१—वर्तना (जो दूसरे के। बर्तावे)
२—परिणाम (द्रव्य की ऐसी पर्याय जो एक धर्म की निवृत्ति
रूप और दूसरे धर्म की जननरूप होय—
३—क्रिया (हलनचलनादि रूप)
४—परत्वापरत्व (छोटा बडा होना)

४—शिक्षाव्रत—

१—सामायिक (सर्व जीवों मे समताभाव रखना)
२—प्रोषधोपवास (अष्टमी चतुर्दशी को प्रोषध पूर्वक
उपवास करना)
३—भोगोपभोगपरिमाण (भोग-उपभोग का नियम करना)
४—अतिथि संविभाग (सुपात्र को दान देकर पीछे खाना)

४—पर्व—

२—अष्टमी } एक मासके
२—चतुर्दशी }

४—पुद्गल—

१—स्कंध
२—स्कंध देश
३—स्कंध प्रदेश
४—अणु

४—दान में विशेषता—

१—विधि
२—द्रव्य
३—पात्र
४—दाता

४—विनय—

१—दर्शन विनय
२—ज्ञान विनय
३—चारित्र विनय
४—उपचार विनय

४—पदार्थों को जानने के उपाय—

१—निक्षेप
२—प्रमाण
३—नय
४—लक्षण

४—प्रकृति—

१—जीवविपाकी (जिस का फल जीव में हो)

२—पुद्गलविपाकी-(जिस का फल शरीर में हो)
३—भवविपाकी-(जिस के फल से जीव संसार में रुके)
४—क्षेत्रविपाकी-(जिस के फल से विग्रह गति में जीवका आकार पहला सा बना रहे)

४—देवगति के कारण—

१—सरागसंयम
२—संयमासंयम
३—अकामनिर्जरा
४—बाल तप

४—आनुपूर्वी

१—नरकगत्यानुपूर्वी
२—तिर्यग्गत्यानुपूर्वी
३—मनुष्यगत्यानुपूर्वी
४—देवगत्यानुपूर्वी

४—नीच गोत्र कारण—

१—आत्मप्रशंसा
२—पर निंदा
३—दूसरो के सद्गुणों को ढकना
४—दूसरों के दुर्गुणों को कहना

४—हेत्वाभास—

१—असिद्ध (जिस हेतु के अभाव का निश्चय हो)

२—विरुद्ध (साध्य से विरुद्ध पदार्थ के साथ जिसकी व्याप्ति हो)
३—अनेकांतिक (जो हेतु पक्ष, सपक्ष, विपक्ष तीनों में व्यापे)
४—अकिंचित्कर (जो हेतु कुछ भी कार्य करने में समर्थ न हो)

४—पर्यायार्थिकनय—

१—ऋजुसूत्र (भूत भविष्यत की अपेक्षा न करके वर्तमान पर्याय मात्र को ग्रहण करे)
२—शब्दनय (लिंग, कारक, वचनादि के भेद से पदार्थ को भेदरूप ग्रहण करे)
३—समभिरूढ (लिंगादिक का भेद न होने पर भी पर्याय शब्द के भेद से पदार्थ को भेदरूप ग्रहण करे)
४ एवंभूत (जिस शब्द का जिस क्रियारुप अर्थ है उसी क्रियारुप परिणमे पदार्थ को ग्रहण करे)

५—अभाव—

१—प्रागभाव (वर्तमान पर्याय का पूर्व पर्याय में अभाव)
२—प्रध्वंसाभाव (आगामी पर्याय में वर्तमान का अभाव)
३—अन्योन्याभाव (पुद्गल द्रव्य की एक वर्तमान पर्याय में दूसरे पुद्गल की वर्तमान पर्याय का अभाव)
४—अत्यंताभाव (एक द्रव्य में दूसरे द्रव्य का अभाव)

६—चारित्र—

१—स्वरुपाचरण (शुद्धात्मानुभव से अविनाभावी चरित्र विशेष)
२—देशचारित्र (श्रावक के व्रत)
३—सकल चारित्र (मुनियों के व्रत)

४—यथाख्यात (कषायों के सर्वथा अभाव से प्रादुर्भूत आत्मा की शुध्धि विशेष)

४—आस्रव—

१—द्रव्यबंध का निमित्त कारण

२—द्रव्यबंध का उपादान कारण

३—भावबंध का निमित्त कारण

४—भावबंध का उपादान कारण

४—विग्रहगति—

१—ऋजुगति (एक समय प्रमाण)

२—पाणिमुक्ता (दो समयवाली)

३—लांगलिका (तीन समयवाली)

४—गामूत्रिका (चार समय वाली)

४—अशौच—

१—ऋतुसंबंधी (मासिक धर्म-रजस्वला)

२—प्रसूति „

३—मृत्यु „

४—अस्पृश्य „

४—विकृति—

१—मद्य

२—मांस

३—मधू

४—मक्खन

४—आहार—

१—खाद्य-खाने योग्य (दाल, भात, रोटी, लड्डू आदि)

२—स्वाद्य-स्वाद लेने योग्य (पान सोपारी)

३—लेह्य—चाटने योग्य (मलाई, चटनी, रबडी)

४—पेय-पीने योग्य (पानी, दुध, शर्बत.

४—चार अक्षर के मंत्र—

अरहंत।

अें ह्रीं नमः

४—चिन्ह ब्रह्मचारी—

१—चोटी में गांठ

२—उर में जनेऊ

३—कटि में मूंज का तागड

४—पैरों में शुक्ल वस्त्र

४—उत्तम श्रोता—

१—नेत्रसमान

२—दर्पण-समान

३—तराजू की डंडी समान.

४—कसौटी समान

४—भुक्तदोष—

१—संयोगदोष

२—प्रमाणदोष

३—अंगारदोष

४—धूमदोष

५—णमोकार—

१—णमोअरहंताणं (अरहंतो को नमस्कार हो)

२—णमोसिद्धाणं (सिद्धों को नमस्कार हो)

३—णमोआयरीयाणं (आचार्यों को नमस्कार हो)

४—णमोउवज्झायाणं (उपाध्यायों को नमस्कार हो)

५—णमोलोएसव्वसाहूणं (लोक में सर्व साधुओं को नमस्कार हो)

५—परमेष्ठी—

१—अरहंत

२—सिद्ध

३—आचार्य

४—उपाध्याय

५—सर्वसाधु

५—इन्द्रिय—

१—स्पर्श (त्वचा)

२—रसना (जीभ)

३—घ्राण (नाक)

४—चक्षुः (आंख)

५—कर्ण (कान)

५—व्रत—

१—अहिंसा (हिंसा न करना)

२—सत्य (झूठ न बोलना)
३—अचौर्य (चोरी न करना)
४—ब्रह्मचर्य (स्त्री मात्र का त्याग)
५—परिग्रहत्याग (धनादि का त्याग)

५—अणुव्रत—

१—अहिंसाणुव्रत (संकल्पी हिंसा का त्याग)
२—सत्याणुव्रत (पीडा कारक कठोर वचन न बोलना)
३—अचौर्याणुव्रत (जल मिट्टी को छोड़कर बिना आज्ञा से कोइ वस्तु ग्रहण न करना)
४—ब्रह्मचर्याणुव्रत (स्वस्त्री में संतोष रखना)
५—परिग्रह परिमाणाणुव्रत (परिग्रह का परिमाण करना)

५—महाव्रत—

१—अहिंसा (हिंसा का सर्वथा त्याग
२—सत्य (झुठ का सर्वथा त्याग)
३—अचौर्य (चोरी का सवथा त्याग)
४—ब्रह्मचर्य (१८००० शील पालना)
५—परिग्रहत्याग (सर्व परिग्रहका त्याग करना)

५—पाप—

१—हिंसा (प्रमादसे प्राणों का घात करना)
२—झूठ (असत् का कहना)
३—चोरी (बिना दिये वस्तु ग्रहण करना)

४—कुशील (मैथुन)

५—परीग्रह (मूर्छा)

५—समिति—

१—ईर्या (चार हाथ जमीन देख कर चलना)

२—भाषा (हित-मित-प्रियवचन बोलना)

३—एपणा (एक बार शुद्ध निर्दोष आहार लेना)

४—आदाननिक्षेपण (पीछी कमंडलु देखकर उठाना रखना)

५—प्रतिष्ठापना (जीव रहित स्थान में मलमूत्र करना)

५—इन्द्रिय-जय—

पांचों इन्द्रियों को वशमें करना

५—इन्द्रियों के विषय—

१—स्पर्श (स्पर्शनेन्द्रिय से जाना जाय)

२—रस (रसना-इंद्रिय से मालुम पडे)

३—गंध (घ्राणेन्द्रिय से मालुम पडे)

४—वर्ण (चक्षुर्इन्द्रिय से जाना जाय)

५—शब्द (कर्णेन्द्रिय से जाना जाय)

५—स्थावर—

१—पृथ्वीकाय (पृथ्वी जिस का शरीर हो)

२—जलकाय (जल जिसका शरीर हो)

३—तेजकाय (अग्नि जिस का शरीर हो)

४—वायुकाय (पवन जिस का शरीर हो)

५—वनस्पतिकाय (वनस्पति जिसका शरीर हो)

५—कल्याणक—

१—गर्भ

२—जन्म

३—तप

४—ज्ञान

५—मोक्ष

५—ज्ञान—

१—मतिज्ञान (इन्द्रिय व मन की सहायता से पदार्थ का जानना)

२—श्रुतज्ञान (मतिज्ञान से जानी हुई बात में विशेष जानना)

३—अवधिज्ञान (इन्द्रियों की सहायता) बिना रूपी पदार्थ को जानना)

४—मनःपर्ययज्ञान (मन की बात जानना)

५—केवलज्ञान (लोकालोक की सर्व वस्तुओं की भूतभविष्यत् वर्तमानपर्याय व गुण को एक साथ जानना)

५—मिथ्यात्व—

१—विपरीत (उलटा श्रद्धान)

२—एकान्त (एक मत पकड़ना)

३—विनय (खरा-खोटा बराबर समझना)

४—संशय (संदेह रखना)

५—अज्ञान (पदार्थ का नहीं जानना)

५—अजीव—

१—पुद्गल (रूप-रस-गंध-स्पर्श सहित)
२—धर्म (जो जीव पुद्गल को चलने में मदद करे)
३—अधर्म (जीव पुद्गल को स्थिति करने में मदद करे)
४—आकाश (रहने के लिये जगह दे)
५—काल (परिणमन होना)

८—रस—

१—खट्टा
२—मीठा
३—कडुवा
४—चरपरा
५—कषायला

९—रूप—

१—काला
२—पीला
३—नीला
४—लाल
५—सफेद

१०—मेरु—

१—सुदर्शन
२—विजय
३—अचल

४—मन्दर

५—विद्युन्माली

५.—अस्तिकाय—

१—पुद्गल २ धर्म ३ अधर्म ४ आकाश ५ जीव

५.—पंचांगपूजा—

१—आह्वानन (बुलाना)

२—स्थापन (बैठाना)

३—सन्निधिकरण (हृदय में विराजमान करना)

४—पूजन (अष्ट द्रव्य से पूजना)

५—विसर्जन (बिदा करना)

५.—आचर—

१—दर्शन

२—ज्ञान

३—चारित्र

४—तप

५—वीर्य

५.—जाति—

१—एकेन्द्रिय

२—द्वीन्द्रिय

३—त्रीन्द्रिय

४—चतुरिन्द्रिय

५—पंचेन्द्रिय

५—अनुत्तर—

१—विजय
२—वैजयंत
३—जयंत
४—अपराजित
५—सर्वार्थसिद्धि

५—बाल ब्रह्मचारी—

१—वासुपूज्य
२—मल्लिनाथ
३—नेमिनाथ
४—पार्श्वनाथ
५—महावीर

५—दातार के आभूषण—

१—आनंद पूर्वक देना
२—आदर पूर्वक देना
३—प्रिय वचन से देना
४—निर्मल भाव से देना
५—जन्म सफल मानना

५—दातार के दूषण—

१—विलम्ब करना

२—विमुख होकर देना

३—दुर्वचन से देना

४—निरादर से देना

५—देकर पछताना

५.—ज्योतिषी—

१—सूर्य

२—चन्द्रमा

३—ग्रह

४—नक्षत्र

५—तारागण

५.—निगोद स्थान—

१—स्कंध

२—अंडर

३—आवास

४—पुलवी

५—शरीर

५.—लब्धि—

१—क्षयोपशम [अनादि या सादि मिथ्यादृष्टी जीवको बहुत काल से एकेन्द्री में भ्रमण करते २ समय पाकर स्थावर से निकल पंचेन्द्रित्व की प्राप्ति]

२—विशुद्धि (शुभ कर्मोदय से दानादि शुभ कार्यों के लिये

उद्यत होना)

३—देशना—(सद्‌गुरु के उपदेश से तत्वज्ञान की प्राप्ति होना

४—प्रयोग (काल पाकर व्रत धारण करके व उपवासादि तपश्चर्या करके आयु-कर्म सिवाय शेष कर्मों की स्थिति को अंतः कोडाकोडी सागर प्रमाण कर देना)

५—करण (परिणाम)

६—परावर्तन—

१—द्रव्य (संसार में भ्रमण करना)

२—क्षेत्र

३—काल ("सर्वार्थ सिद्धि" में देखो)

४—भव

५—भाव

—७—पंचामृतादिभिषेक—

१—दूध

२—दही

३—घी

४—सुगंधित जल

५—इक्षुरस

८—अभक्ष्य—

१—त्रसघात (जिन के खाने में त्रस जीवों का घात है)

२—बहुस्थावरघात (जिन के खाने में स्थावर जीवों का
घात हो)

३—प्रमादक (प्रमाद बढाने वाले)

४—अनिष्ट (शरीर को इष्ट न हों)

५—अनुपसेव्य (सेवन करने लायक न हों)

८—बंध-कारण—

१—मिथ्यात्व (विपरीतादि)

२—अविरति (छहकाय के जीवों की हिंसा करना—मन को व
५ इन्द्रियों को वश न करना)

३—प्रमाद (शुद्ध आत्मानुभव से डिगना)

४—कषाय (जो आत्मा को दुखदे)

५—योग (मन-वचन काय की प्रवृत्ति)

९—निग्रन्थ—

१—पुलाक (उत्तर गुणों की भावना रहित—मूल गुणों में भी
कभी दोष आवे)

२—वकुश (मुल गुण परिपुर्ण होंय परंतु शरीर उपकरणादिकी
शोभा बढाने की इच्छा हो)

३—कुशील (मूल व उत्तर गुणोंका पूर्णता—कदाचित् उत्तर
गुणों में दोष आवे)

४—निर्ग्रन्थ (जिस मुनि के मोहनीय कर्म के उदय का
अभाव होय)

५—स्नातक केवली भगवान.

५—स्वाध्याय—

१—वाञ्चना (बांचना)
२—पृच्छना (पूछना)
३—अनुप्रेक्षा (बार २ विचार करना)
४—आम्नाय (पाठ सीखना)
५—धर्मोपदेश (धर्म का उपदेश करना)

५—पांडव—

१—युधिष्ठिर
२—भीम
३—अर्जुन
४—नकुल
५—सहदेव

५—उदंबरफल—

१—बड
२—पीपल
३—पाकर
४—उंबर
५—कठूमर

५—स्थान ४५ लाख योजन के:—

१—सिद्धक्षेत्र

२—सिद्धशिला
३—प्रथम स्वर्ग का ऋजु विमान
४—प्रथम नरक का पहला पाथडा
५—ढाइद्वीप

८—नाम महावीर स्वामी—

१—महावीर
२—सन्मति
३—अतिवीर
४—वीर
५—वर्द्धमान

८—निद्रा—

१—निद्रा (निद्रा आना)
२—निद्रा निद्रा (पूरी नींद आने पर भी सोना)
३—प्रचला (बैठे बैठे ऊंघना)
४—प्रचला प्रचला (मुंह में से लार पडना)
५—स्त्यानगृद्धि (नींद में से उठकर भारी काम करने पर भी उठने पर उसकी खबर न हो।

८—निर्वाणक्षेत्र

१—सम्मेदशिखर
२—चम्पापुर
३—पावापुर

४—गिरनार
५—कैलाशगिरि

६—परोक्ष प्रमाण—

१—स्मृति (पहली जानी हुइ बात को याद करना)
२—प्रत्यभिज्ञान (स्मृति और प्रत्यक्ष के जोड रूप ज्ञान को)
३—तर्क (व्याप्ति का ज्ञान)
४—अनुमान (साधन से साध्य का ज्ञान)
५—आगम (आप्त-वचन)

७—भाव—

१—औपशमिक (कर्मों के उपशम से)
२—क्षायिक (कर्मों के क्षय से)
३—क्षायोपशमिक (उपशम व क्षय से)
४—औदयिक (कर्मों के उदय से)
५—पारिणामिक (जो कर्मों के उदय क्षय, उपशम से न हो कर स्वाभिविक हों)

८—शरीर—

१—औदारिक (मनुष्य तिर्यंच के स्थूल शरीर को)
२—वैक्रियक (देव नारकियों के शरीर को)
३—आहारक (छट्ठे गुण स्थान वर्ती मुनि के तत्वों में कोई शंका होने पर केवली या श्रुत केवली के पास जाने के लिए मस्तक में से एक हाथका पुतला निकलता है।)

४—तैजस (कांति देने वाला)
५—कार्माण (कर्म रूप)

८—ज्ञानावरणी—

१—मतिज्ञानवरण (मति ज्ञान को रोकने वाला)
२—श्रुतज्ञानावरण (श्रुतज्ञान को रोकने वाला)
३—अवधिज्ञानावरण (अवधि ज्ञान को रोकने वाला)
४—मनःपर्यय ज्ञानावरण (मनःपर्यय ज्ञान को रोकने वाला)
५—केवल ज्ञानावरण (केवल ज्ञान को रोकने वाला)

८—अंतराय—

१—दानांतराय (दान में विघ्न आना)
२—लाभांतराय (लाभ में ,, ,,)
३—भोगांतराय (भोग में ,, ,,)
४—उपभोगांतराय (उपभोग में ,, ,,)
५—वीर्यांतराय (ताकत में ,, ,,)

८—चारित्र

१—सामायिक (सब जीवों में समता भाव रखना)
२—छेदोपस्थापना (व्रत आदि में भंग पडने पर प्रायश्चित से फिर सावधान होना)
३—परिहार विशुद्धि (रागादि विकल्प त्याग कर अधिकता के साथ आत्म शुध्धि करना)
४—सूक्ष्मसांपराय (दश वें गुण स्थान का चारित्र)

५—यथाख्यात ११-१२-१३-१४ वें गुणस्थान का चारित्र)

५—संघात—

१—औदारिक
२—वैक्रियक
३—आहारक
४—तैजस
५—कार्माण

५—बंधन—

१—औदारिक
२—वैक्रियक
३—आहारक
४—तैजस
५—कार्माण

५—स्नान—

१—पादस्नान (पैर धोना)
२—जानुस्नान (जंधा पर्यंत)
३—कटिस्नान (कमर तक)
४—ग्रीवास्नान (गर्दन तक)
५—शिरस्नान (शिर पर्यंत नहाना)

५—ब्रह्मचारी—

१—उपनय (श्रावकाचार पालने वाले, विद्याभ्यास में तत्पर गृहस्थ धर्म में निपुण)
२—अवलंब (जब तक शादी न करे क्षुल्लक वेष में रहे, अध्ययन पीछे लग्न करे)
३—अदीक्षित (बिना दीक्षा ही व्रताचरण में लीन हो शास्त्राभ्यास पीछे शादी करे
४—गूढ (बाल्यावस्था से शास्त्र में प्रेम हो. हट से शादी करे
५—नैष्ठिक (जीवन पर्यंत स्त्री मात्र का त्याग करे एक वस्त्र रक्खे)

८—वर्ग—

१—कवर्ग (क ख ग घ ङ)
२—चवर्ग (च छ ज झ ञ)
३—टवर्ग (ट ठ ड ढ ण)
४—तवर्ग (त थ द ध न)
५—पवर्ग (प फ ब भ म)

८—जिष्टी—[लड़ी]

१—शीरख
२—उपसीरख
३—अवघाट
४—प्रकांडकं
५— तरलप्रबंध

५.—धारणा—

१—पार्थिवी धारणा
२—आग्नेयी धारणा
३—वायु धारणा
४—जल धारणा
५—तत्व रूपवती धारणा (ज्ञानार्णव में देखो)

५.—अनर्थ दंड—

१—पापोपदेश (पाप का उपदेश देना)
२—हिंसादान [हिंसा के उपकरण देना]
३—प्रमादचर्या [विना प्रयोजन जलादि ढोरना]
४—दुःश्रुति [राग द्वेष करने वाली कथाएं सुनना]
५—अपध्यान (खोटा विचार करना)

५.—अनृद्धि प्राप्तार्य—

१—क्षेत्रार्या
२—जात्यार्या—
३—कर्मार्या
४—चारित्रार्या
५—दर्शनार्या

५.—अनुमान—

१—प्रतिज्ञा (पक्ष और साध्य का कहना)
२—हेतु [साधन का वचन]
३—उदाहरण [व्याप्ति पूर्वक दृष्टांत कहना]
४—उपनय [पक्ष और साधन में दृष्टांत की सदृशता बताना)
५—निगमन [नतीजा निकाल कर प्रतिज्ञा को दोहराना)

६—इन्द्रिय-वश-जीवों के दृष्टांत—

१—हाथी
२—मछली
३—भ्रमर
४—पतंग
५—हरिण

७—सातावेदनीय बंध कारण—

१—भूतवृत्यनुकंपा
२—दान
३—सरागसंयमादियोग
४—क्षमा
५—शौच

८—दर्शन मोहनीय बंध कारण—

१—केवली अवर्णवाद [दोष लगाना]
२—श्रुत ,,
३—संघ ,,
४—धर्म ,,
५—देव ,,

५—सूना—

१—चक्की
२—चूल्हा
३—ओखली
४—जलगालन
५—झाड़ू देना

६—आश्चर्य—

१—रत्नवृष्टि
२—पुष्पवृष्टि
३—गंधोदकवृष्टि
४—मंद सुगंध पवन
५—दुंदुभि बजना

७—क्षेत्रपाल—

१—वीरभद्र
२—मानभद्र

३—मणिभद्र
४—भैरव
५—अपराजित

५—राजा के बल—

१—भाग्यबल
२—दैवबल
३—मंत्रबल
४—शरीरबल
५—सामंतबल

५—संशय—

१—विनय संशय
२—क्षेत्र ,,
३—मार्ग ,,
४—सूत्र ,,
५—सुखदुख ,,

५—अक्षर के मंत्र—

१—नमः सिद्धेभ्यः
२—असि आ उसा
३—ओं अर्हं नमः

८—वीरत्व नमः

५- समाधि मरण शुद्धि—

१—जीने की इच्छा न करना
२—मरने की इच्छा न करना
३—मित्रों में अनुराग न करना
४—पूर्व भोगे हुए सुख का अनुभव न करना
५—निदान न करना

५—अतिचार—

हरेक व्रत के ५-५ और सम्यग्दर्शन तथा समाधि मरण के ५
अतिचार होते हैं सब ७० हैं

५—दृष्टिवादांग के भेद—

१—परिकर्म
२—सूत्र
३—प्रथमानुयोग
४—पूर्वगत
५—चूलिका

८—मुनिका भोजन—

१—गोचरी (गाय तुल्य)
२—भ्रमरी (भ्रमरवत्)
३—गर्त पूरन (गड्ढा भरना जैसे तैसे)
४—दाहशमन
५—ओंगण